गुफाओं पर रौनक बरसाई है, चितेरे जैसे रंग और रेखा में दर्द तथा दया की कहानी लिखते
उभारते-कोरते गए हैं, वैसे ही अजन्ता पर कुदरत का नूर बरस पड़ा है, प्रकृति भी वहाँ थिरक उठी है। पर्वतमालाओं से निचौं
बम्बई (अब मुम्बई) के सूबे में बम्बई और हैदराबाद के बीच, विन्ध्याचल के पूरब-पश्चिम दौड़ती पर्वतमालाओं से निचौं पहाड़ों का एक सिलसिला उत्तर से दक्खिन चला गया है, जिसे सह्याद्रि कहते हैं। अजन्ता के गुहा मन्दिर उसी पहाड़ी जंजीर क सनाथ करते हैं।

अजन्ता गाँव से थोड़ी ही दूर पर पहाड़ों के पैरों में साँप-सी लोटती बाघुर नदी कमान-सी मुड़ गई है। वहीं पर्वत का सिलसि एकाएक अर्द्धचन्द्राकार हो गया है, कोई दो-सौ पचास फुट ऊँचा हरे वनों के बीच मंच-पर-मंच की तरह उठते पहाड़ों का सिलसिला हमारे पुरखों को भा गया है और उन्होंने उसे खोदकर भवनों-महलों से भर दिया। सोचिए जरा ठोस पहाड़ की चट्ट ग़ती और कमजोर इंसान का उन्होंने मेल जो किया, तो पर्वत का हिया दरकता चला गया और वहाँ एक-से-एक बरामदे, ह र मन्दिर बनते चले गए।

ले पहाड़ काटकर उसे खोखला कर दिया गया, फिर उसमें सुन्दर भवन बना लिए गए, जहाँ खम्भों पर उभारी मूरतें विहँस उ र की समूची दीवारें और छतें रगड़ कर चिकनी कर ली गईं और तब उनकी जमीन पर चित्रों की एक दुनिया ही बसा दी पलस्तर लगाकर आचार्यों ने उन पर लहराती रेखाओं में चित्रों की काया सिरज दी, फिर उनके चेले कलावन्तों ने उनमे र प्राण फूँक दिए। फिर तो दीवारें उमग उठीं, पहाड़ पुलकित हो उठे।

जीवन बरस पड़ा है इन दीवारों पर; जैसे— फसाने अजायब का भण्डार खुल पड़ा हो। कहानी-से-कहानी टकराती बन्दरों की कहानी, हाथियों की कहानी, हिरनों की कहानी। कहानी क्रूरता और भय की, दया और त्याग की। जहाँ बे दया का भी समुद्र उमड़ पड़ा है। जहाँ पाप है, वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कँगले, विलासी और भि , मनुष्य और पशु सभी कलाकारों के हाथों सिरजते चले गए हैं। हैवान की हैवानी को इंसान की इंसानियत से कैसे है, कोई अजन्ता में जाकर देखे। बुद्ध का जीवन हजार धाराओं में होकर बहता है। जन्म से लेकर निर्वाण तक प्रधान घटनाएँ कुछ ऐसे लिख दी गई हैं कि आँखें अटक जाती हैं, हटने का नाम नहीं लेतीं।

कमल लिए बुद्ध खड़े हैं, जैसे छवि छलकी पड़ती है, उभरे नयनों की जोत पसरती जा रही है और यह यशो ल नाल धारण किए त्रिभंग में खड़ी और यह दृश्य है महाभिनिष्क्रमण का—यशोधरा और राहुल निद्रा में खोए र धड़कते हिया को सँभालते और यह नन्द है, अपनी पत्नी सुन्दरी का भेजा, द्वार पर आए बिना भिक्षा के ल ने जो आया था और जिसे भिक्षु बन जाना पड़ा था। बार-बार वह भागने को होता है, बार-बार पकड़क ता है। उधर फिर वह यशोधरा है बालक राहुल के साथ। बुद्ध आए हैं, पर बजाय पति की तरह आने के भि र भिक्षापात्र देहली में चढ़ा देते हैं, यशोधरा क्या दे, जब उसका स्वामी भिखारी बनकर आया है? क्या न अब उसके पास, उसकी मुकुटमणि सिद्धार्थ के खो जाने के बाद? सोना-चाँदी, मणि-मानिक, हीरा-मोत के लिए मिट्टी के मोल नहीं। पर हाँ, है कुछ उसके पास—उसका बचा एकमात्र लाल—उसका राहुल बस की तरह बुद्ध को दे डालती है।

दरों का चित्र है, कितना सजीव कितना गतिमान। उधर सरोवर में जलविहार करता वह गजराज क नियों को दे रहा है। वहाँ महलों में वह प्यालों के दौर चल रहे हैं, उधर वह रानी अपनी जीवन-यात्रा टूटा जा रहा है। खाने-खिलाने, बसने-बसाने, नाचने-गाने, कहने-सुनने, वन-नगर, ऊँच-नीच, धर्न ते हैं, सब आदमी अजन्ता की गुफाओं की इन दीवारों पर देख सकता है।

घटनाएँ तो इन चित्रित कथाओं में हैं ही, उनके पिछले जन्मों की कथाओं का भी इसमें चित्र थाएँ 'जातक' कहलाती हैं। उनकी संख्या 555 है और इनका संग्रह 'जातक' नाम से प्रसिद्ध है, ज़ातक कथाओं में से अनेक अजन्ता के चित्रों में विस्तार के साथ लिख दी गई हैं। इन पिछले के रूप में विविध योनियों में जन्म लिया था और संसार के कल्याण के लिए दया और त्या लिदान हो गए थे। उन स्थितियों में किस प्रकार पशुओं तक ने मानवोचित व्यवहार किया था, यह सब उन चित्रों में असाधारण खूबी से दर्शाया गया है और खोल दी है